Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 11 |NOVEMBER 2025

झारखंड में नागवंशियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ. श्वेता कुमारी [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जमशेदपुर वर्कर्स कॉलेज, मानगो, जमशेदपुर.**

ABSTRACT:

भारत प्राचीन काल की भूमि है और यह समृद्ध ऐतिहासिक अतीत के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों वाले स्थलों से भरा हुआ है। झारखंड में स्थित, नवरतनगढ़ का किला शहर एक ऐसा ही स्थल है जो नागवंशी राजवंश की चैथी राजधानी के रूप में कार्य करता था, जो पहली शताब्दी ईस्वी से भारत का सबसे लंबे समय तक चलने वाला राजवंश था। नागवंशियों ने वर्तमान छोटानागपुर पठार के कुछ हिस्सों पर शासन किया। हालाँकि, नवरतनगढ़ की महिमा बहुत पहले ही खत्म हो चुकी है और अब यह एक समृद्ध सांस्कृतिक परिदृश्य के बीच खंडहरों में पड़ा है। हालाँकि इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा एक पुरातात्विक स्थल के रूप में नामित किया गया है, फिर भी इसका व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण और जीर्णोद्धार कार्य होना बाकी है। यह पेपर कुछ महत्वपूर्ण संरचनाओं और उनकी स्थापत्य शैलियों का दस्तावेज़ीकरण करने का प्रयास करता है। यह आस-पास की जीवित विरासतों और अन्य स्थलों को भी रिकॉर्ड करता है जो नागवंशी राजवंश के बड़े शाही पदचिह्नों का हिस्सा थे/हैं, छोटानागपुर क्षेत्र में उनकी यात्रा और इसकी समृद्धि में उनके योगदान को ट्रैक करके।

KEYWORDS:

नागवंशी, पुरातत्व, छोटानागपुर, महत्वपूर्ण और सांस्कृतिक।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th November 2025	30th November 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.18039828	https://zenodo.org/records/18039828

परिचय

झारखंड को इतिहास में विभिन्न नामों से जाना गया है, जिनमें प्रमुख हैं कीकट प्रदेश, व्रात्य प्रदेश, पौर या पौन्द्रिक, अर्चखंड या कर्कखंड, नागपुर, झारखंड कोकर या खूखरा, चुटिया नागपुर और छोटानागपुर आदि। वर्तमान में जिसे मगध कहा जाता है, उसे ऋग्वेद काल में 'कीकट' कहा गया था, और उस समय इसका क्षेत्रफल वर्तमान की तुलना में कहीं अधिक व्यापक था। अथर्ववेद काल में मगध, अंग और अन्य प्रमुख जनों के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। इस काल में 'व्रात्य प्रदेश' नाम का भी प्रयोग हुआ। ऐतरेय ब्राह्मण में पुन्ड्रों का उल्लेख आंध्रों, शबरों और पुलिंदों के साथ तथा बंघों और मगधों के संदर्भ में चेरों के साथ किया गया है। कीथ और मैकडॉनेल के अनुसार, पुन्ड्र जाति ने वर्तमान बिहार और बंगाल के क्षेत्रों पर अधिकार किया था (केशरी, 2014)।यद्यपि "कोकराह" शब्द इस क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध हो गया। 'कोकराह' उस क्षेत्र को संदर्भित करता था जिस पर कोकराह के राजा का शासन था और जिसे अकबरनामा (आइने–ए–अकबरी) में सूबा बिहार का हिस्सा बताया गया है। मुगलों ने इसे कोइरा उड़ीसा या नागपुर के रूप में अंकित किया। "नागपुर" नाम की उत्पत्ति पंद्रहवीं या सोलहवीं शताब्दी ईस्वी में मानी जाती है। 1765 ईस्वी में दीवानी अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान किए गए। नागपुर परगना का गठन नागवंशी राजा के साथ हुए समझौतों के माध्यम से किया गया था (कुमार, 1970)।

नवरतनगढ़ (जिसे दोइसा में होने के कारण श्दोइसागढ़श भी कहा जाता है), नागवंशी राजवंश की चौथी राजधानी थी, जिसे 17वीं सदी में 47वें नागवंशी शासक राजा दुर्जन साल ने बनवाया था (यह जानकारी 57वें नागवंशी राजा द्रिपनाथ शाह (लगभग 1762–1790 ई.) द्वारा 1787 में ब्रिटिश सरकार को सौंपी गई नागवंशी शासकों की सूची पर आधारित है)। यह झारखंड के गुमला जिले के सिसई ब्लॉक में बहुत दूर स्थित है। हालांकि यहां बड़ी संख्या में पर्यटक और शोधकर्ता आते है। झारखंड सरकार ने कुछ साल पहले नवरतनगढ़ को संरक्षण के लिए एक विरासत स्थल के रूप में मान्यता दी थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) भी इसे एक विरासत पर्यटन स्थल के रूप में इसकी अपार क्षमता को मानता है, क्योंकि इस जगह से कई किंवदंतियां जुड़ी हैं जिनके बारे में लोगों को जागरूक करने की ज़रूरत है।

नागवंशी राजाओं की मातृभूमि और प्रशासनिक क्षेत्र

पितृसत्ता प्रमुख चूटा हादम, जो संभवतः प्रसिद्ध सम्राट फणी मुकुट राय की वंशावली में चौथे स्थान पर थे, या कोई वृद्ध व्यक्ति थे, के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने ही चुटिया नगर की स्थापना की थी। प्रचलित रिवाज के अनुसार, 1851 में चुटिया में एक विशाल मेला आयोजित किया जाता था, जो 1877 तक चलता रहा। एक समय ऐसा भी था जब यह माना जाता था कि "छोटा" नाम की उत्पत्ति पुराने शब्द "चुटिया" से हुई है, और इस मत का समर्थन भूगोलवेत्ता कर्नल डाल्टन तथा टोपोग्राफिकल सर्वे के अधिकारी जी. सी. डिप्री ने किया था। रांची जिला गजेटियर के संपादक एम. जी. हैलेट भी इस मत से सहमत थे, यद्यपि वे इसके समर्थन में कोई ठोस तर्क प्रस्तुत नहीं कर सके। यह ध्यान देने योग्य है कि रेनल ने अपने मानचित्र में इस स्थान के नाम की गलत वर्तनी "Chutiah" लिखी और देश के लिए ष्बेनजं छंहचनतष् शब्द का उपयोग किया। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चुटिया ग्राम संभवतः जिले के नाम की मूल प्रेरणा नहीं था (कुमार, 1970)।

भारत की नाग जाति का इतिहास अत्यंत प्राचीन माना जाता है और इसे देश की सबसे शक्तिशाली जातियों में से एक समझा गया है। वेंकटेश्वर का मत है कि नाग या सर्प सभ्यता केवल भारतीय उपमहाद्वीप के अर्धवृत्ताकार भूभाग तक सीमित नहीं थी, बल्कि भारत की सीमाओं के बाहर भी फैली हुई थी।मोहेंजोदड़ो से सर्प के प्रतीक चिह्न प्राप्त हुए हैं, जो यह संकेत करते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता में भी सर्प पूजा या सर्प से जुड़े सांस्कृतिक प्रतीक विद्यमान थे। इन प्रतीकों से नाग परंपरा की अत्यंत प्राचीनता और व्यापकता का अनुमान लगाया जाता है।महाभारत में अर्जुन का विवाह एक नागकन्या से हुआ बताया गया है। इसी प्रकार रामचन्द्र के पुत्र कुश का विवाह भी कुमुदवती नामक नागकन्या से होने का उल्लेख मिलता है। इन प्रसंगों के माध्यम से नाग समुदाय और कुरीत/क्षत्रिय वंशों के बीच वैवाहिक संबंधों और सामाजिक–सांस्कृतिक निकटता का संकेत मिलता है। केशरी (2014) के अनुसार भारत के अनेक स्थानों के नाम, जैसे नागरकोट, नागपट्टन, नागपुर आदि, आज भी नाग जाति या नाग परंपरा की स्मृति को जागृत करते हैं। ऐसे स्थान–नाम यह दर्शाते हैं कि किसी काल में इन क्षेत्रों में नाग समुदाय का प्रत्यक्ष या सांस्कृतिक प्रभाव विद्यमान रहा होगा।

मौखिक कथाँ

इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य अतीत की "प्रामाणिक" तस्वीर देना नहीं है, बल्कि यह दिखाना है कि कोई भी संस्कृति भूमि से अपने संबंध के आधार पर अपनी पहचान कैसे रचती है

और समय के साथ उसे कैसे बनाए रखती है। ये कहानियाँ स्थिर या यांत्रिक रूप से दोहराई जाने वाली छवियाँ नहीं हैं, बल्कि वे अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार बदल भी सकती हैं। अतः आदिवासियों ने इन्हीं "इतिहासों" के माध्यम से स्वयं को अपने अतीत में पुनर्लिखित करने का कार्य किया, जिससे उनके अतीत और वर्तमान के बीच का संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुआ (गुप्ता, 2019)।कांके प्रखंड में स्थित सुतियाम्बे गाँव नागवंशी शासकों की स्थापना से जुड़ी परंपरागत कथा से संबंध रखता है। नागवंशी वंश के प्रथम सम्राट फणी मुकुट राय का इतिहास निश्चित नहीं माना जा सकता, क्योंकि उनके बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। प्रथम सम्राट फणी मुकुट राय के जन्म से जुड़ी कई दंतकथाएँ राँची क्षेत्र के लोगों के बीच अत्यंत आदर और विश्वास के साथ सुनाई और मानी जाती हैं।

सबसे सामान्य कथा–रेखाओं में से कुछ इस प्रकार हैं:

कहा जाता है कि फणी मुकुट राय की माता कौन थीं, यह किसी को ज्ञात नहीं है, और उनके जन्म से जुड़ी कथाओं में यही प्रसंग प्रमुख रूप से मिलता है। एक नाग (सर्प) सुतियाम्बे क्षेत्र के अंधेरिया–इंजोरिया पोखर के किनारे खड़े एक नवजात शिशु को अपने फन की छाया से संरक्षण दे रहा था। जब उस समय के शासक मदरा मुंडा को इस घटना के बारे में पता चला, तो वे उस शिशु को अपने साथ ले गए और उसे अपने ही पुत्र की तरह पालन–पोषण किया। समय बीतने पर वही बालक बड़ा होकर फणी मुकुट राय बना, जिसने आगे चलकर नागवंशी वंश की स्थापना की।

एक अन्य कथा के अनुसार फणी मुकुट राय शेषनाग और बनारस की एक कन्या के पुत्र माने जाते हैं। जब उनका जन्म हुआ, उसी क्षण शेषनाग अपने लोक को प्रस्थान कर गए और वह कन्या अपने शिशु सहित अंधेरिया–इंजोरिया पोखर के किनारे अकेली रह गई। इसके बाद राजा मदरा मुंडा वहाँ पहुँचे, उस बालक को अपने साथ ले गए और उसे अपने पुत्र की तरह पालन–पोषण किया। बाद के समय में, जब राजा वृद्ध हो गए और उत्तराधिकार का समय आया, तो उन्होंने तुरंत अपने स्वयं के पुत्र को गद्दी नहीं सौंपी, बल्कि दोनों राजकुमारों के बीच कठोर प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें शेषनाग का पुत्र विजयी हुआ और वही प्रथम नागवंशी सम्राट बना।

उरांव जनजाति के लोगों के अनुसार एक और कथा प्रचलित है, जिसके अनुसार प्रथम नागवंशी शासक वास्तव में उरांव समुदाय के राजपरिवार का बालक था। रोहतासगढ़ पर आक्रमण के समय उरांव राजवंश का एक शाही परिवार सुतियाम्बे गाँव के निकट आश्रय लेकर ठहरा हुआ था। उस परिवार की राजकुमारी उस समय गर्भवती थी। यात्रा की कठिन परिस्थितियों के बीच नवजात शिशु को साथ ले जाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण था, इसलिए प्रस्थान से ठीक पहले उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसे साथ लेकर चल पाना संभव न होने के कारण उसे वहीं जलाशय ;तालाबद्ध के निकट छोड़ देने का निर्णय लिया गया। सुबह के समय गाँव के राजा मदरा मुंडा ने देखा कि एक सर्प उस छोटे बालक को अपने फन की छाया में ढँककर उसकी रक्षा कर रहा है। वे उस शिशु को अपने साथ महल में ले आए और अपने पुत्र के साथ ही उसका पालन–पोषण किया। समय के साथ जब उत्तराधिकार का प्रश्न आया, तो यद्यपि वे दोनों बच्चों से समान स्नेह रखते थे, फिर भी यह बालक उन्हें अधिक प्रिय और योग्य लगा। परिणामस्वरूप उसी बालक को फणी मुकुट राय नाम देकर नागवंशी वंश का प्रथम राजा बनाया गया।

नागवंशियों की जीवित विरासत

नागवंशी शासकों ने छोटानागपुर में, जहाँ उन्होंने लगभग दो हज़ार सालों तक शासन किया, कई इमारतें और मंदिर बनवाए। इनमें से कई मंदिरों में आज भी रोज़ाना पूजा होती है, और उनकी पुरानी राजधानी रातुगढ़ में स्थित महल में अभी भी नागवंशी राजवंश के मौजूदा वंशज रहते हैं। इन जीवित विरासतों पर चर्चा की गई है,बर्ट ब्रैडली और फ्रांसिस ब्रैडली (1910)रू

राम मंदिर, चुटिया, रांची

इस मंदिर का निर्माण 1685 में नागवंशी राजा रघुनाथ शाह ने करवाया था, जैसा कि मंदिर के दरवाज़े के ऊपर लगे शिलालेखों से पता चलता है। प्रवेश द्वार के पास मंदिर का बरामदा, साथ ही तराशे हुए खंभों और कंगूरों के पत्थर के उभार, अर्ध मंडप जैसा दिखता है, जो मध्य भारत में मध्यकालीन हिंदू मंदिर वास्तुकला का एक खास तत्व है। चार–छत वाली छत बंगाल की समकालीन वास्तुकला का एक मुख्य तत्व है। मंदिर की पत्थर की संरचना पर पेंटिंग की गई है, और हाल के समय में इसमें अतिरिक्त संरचनाएं जोड़ी गई हैं। मूल मंदिर ग्रेनाइट से बनी दो मंजिला संरचना है। मंदिर का विकास चरणों में हुआ है, जो एक ही परिसर में विभिन्न वास्तुशिल्प शैलियों को दिखाता है।

मदन मोहन मंदिर, बोरेया, रांची

संवत 1722 (1665 ईस्वी) में वैशाख शुक्ल पक्ष दशमी के त्योहार के दौरान, राजा रघुनाथ शाह ने इस पूजनीय मंदिर की स्थापना की थी। दावा किया जाता है कि चारदीवारी और दरवाज़े की नींव 1668 में श्रावण शुक्ल दशमी को रखी गई थी, जो इमारत बनने के तीन साल और तीन महीने बाद की बात है। यह मंदिर सत्रह साल में बनकर तैयार हुआ था। मंदिर परिसर के अंदर लगे शिलालेख के अनुसार, उस समय इमारत की लागत चौदह हज़ार एक रुपये थी।

रातुगढ़ किला, रातू, रांची

झारखंड राज्य के रांची शहर में, रातुगढ़ किला, जिसे रातुगढ़ पैलेस के नाम से भी जाना जाता है, एक ऐसा महल है जो इतिहास से भरपूर है और मौजूदा पीढ़ी का शाही घर है। रातुगढ़ साम्राज्य का मुख्यालय होने के साथ–साथ, यह कभी नागवंशी राजवंश का औपचारिक घर भी था।जब राजाओं ने 1870 में अपनी राजधानी पालकोट से बदलकर रातुगढ़ की, तो उन्होंने रातु पैलेस का निर्माण भी वहीं करवाया। यह एक बगीचे वाला महल है जिसे बहुत सुंदर तरीके से बनाया गया है और यह 22 एकड़ से ज़्यादा ज़मीन पर फैला हुआ है। शानदार बकिंघम पैलेस की बनावट इस इमारत से काफी मिलती–जुलती है।

विवेचना

आदिवासी मिथक के माध्यम से वे अपना अतीत संरक्षित करते हैं, जो केवल काल्पनिक कथा नहीं अपितु उनकी सांस्कृतिक स्मृति का स्थान है। यद्यपि औपनिवेशिक अधिकारी और मिशनरियों ने सृष्टि कथाओं को लिपिबद्ध किया, तथापि मूल ज्ञान आदिवासी सूचकों से ही प्राप्त हुआ था (सेन, 2018)। छोटानागपुर सर्वेक्षण रिपोर्ट में जे. रीड के अनुसार नागवंशी राज्य की स्थापना दसवीं शताब्दी में हुई मानी जाती है। नागवंशी शासकों की स्थापना तिथि और शासनकाल भी असामान्य प्रतीत होते हैं, जैसे फणी मुकुट राय का शासनकाल 94 वर्ष का बताया जाता है। फिर भी दसवीं शताब्दी में नागवंशी राज्य की स्थापना संभावित मानी जाती है। फणी मुकुट राय का पांचेत के गोवंशी क्षत्रियों से वैवाहिक संबंध था तथा पांचेत की सहायता से उन्होंने केओनझर राज्य के आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल कर दिया। सूरगुजा के राक्सेल राजाओं के अधीन कोरबे, बरवे आदि अनेक बस्तियाँ थीं, जिन्हें उन्हें राय की श्रेष्ठता स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा। प्रथम नागवंशी सम्राट के रूप में फणी मुकुट राय ने सम्पूर्ण नागपुरी क्षेत्र को एक सूत्र के अधीन लाकर एकीकृत साम्राज्य की स्थापना की। केशरी (2014) के अनुसार उनके पास आदिवासी लोगों से जैविक संबंध भी थे।यह अध्ययन दर्शाता है कि विदेशी आक्रमणों के अलावा अन्य युद्धों का अभाव इस बात की ओर संकेत करता है कि छोटानागपुर में नागवंशियों का आगमन और उनका निरंतर प्रभुत्व किसी सैन्य विजय का परिणाम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अनुकूलता की देन था। इस शोध पत्र का उद्देश्य झारखंड में नागवंशियों के इतिहास और यहाँ रहने वाली अन्य जनजातियों के साथ उनके संबंधों को प्रदर्शित करना है। प्रकाशित ऐतिहासिक आंकड़े और स्थानीय स्तर पर प्रचलित मौखिक आख्यान भी समान विवरणों का वर्णन करते हैं।"

छोटा नागपुर के महाराजा की पारिवारिक कहानी मुंडा और उरांव कहानियों से काफी मिलती–जुलती है। कहा जाता है कि पुरी जाते समय, पहले राजा के माता–पिता अपने बेटे को जन्म देने के लिए पिटौरिया के पास सूतिआम्बे गाँव में रुके थे। वह एक शक्तिशाली नाग देवता, पुंडारिका नाग, और बनारस के एक ब्राह्मण की बेटी, पार्वती के वंशज थे। पार्वती ने, अपने सती रूप में, एक महिला के रूप में अपनी अतृप्त जिज्ञासा के कारण होने वाले भयानक दर्द के बाद, फणी मुकुट राय नाम के बेटे को जन्म देने के बाद खुद को चिता पर जला दिया। अपनी पत्नी को अपनी असली पहचान बताने के लिए मजबूर किए जाने के बाद, पुंडारिका नाग ने एक पानी के कुंड में सुंदर ढंग से मछली का रूप ले लिया। कहानी के अनुसार, नाग देवता प्रकट हुए और भविष्यवाणी की कि छोटा लड़का एक दिन राज्य पर राज करेगा, जिसे नागखंड या नागपुर के नाम से जाना जाएगा। नवजात शिशु का पालन–पोषण सूतिआम्बे के मानकी मद्रा ने किया, जिसने अपने बेटे का भी पालन–पोषण किया था। मद्रा का मानना था कि गोद लिया हुआ बेटा उसके अपने बेटे से कहीं ज़्यादा बुद्धिमान है, इसलिए जब दोनों लड़के लगभग बारह साल के थे, तो उसने उस बच्चे को उत्तराधिकारी के पद के लिए नामांकित किया। इसके बाद, बाकी मानकियों और परलता–राजाओं ने सर्वसम्मति से फणी मुकुट राय को मुखिया चुना (कुमार, 1970)।

निष्कर्ष

शोध के निष्कर्षों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छोटानागपुर में नागवंशियों का आगमन तथा उनकी सतत प्रभुता सैन्य विजय का परिणाम नहीं थी, अपितु अंतर–सांस्कृतिक सामंजस्य का फल थी। ऐसा इसलिए क्योंकि विदेशी आक्रमणों के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का युद्ध नहीं हुआ था। इस अध्ययन का उद्देश्य झारखंड में नागवंशी लोगों के इतिहास तथा इस क्षेत्र में निवास करने वाली अन्य जनजातियों के साथ उनके संबंधों के प्रमाण प्रस्तुत करना था। प्रलेखित ऐतिहासिक आंकड़ों तथा स्थानीय समुदाय में प्रचलित मौखिक कथाओं दोनों में समान विवरणों का वर्णन मिलता है।

REFERENCES

1. केशरी, डी.वी. (2014)। छोटानागपुर का इतिहास कुछ सूत्र, कुछ सन्दर्भ। रांचीरू सुकृत प्रेस.

2. कुमार, एन. (1970). बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्सरू रांची. पटना, गजेटियर्स ब्रांच, राजस्व विभाग.

3. गुप्ता, एस. डी. (2019). इतिहास या परंपरा? 19वीं सदी के झारखंड में आदिवासियों के अतीत की खोज। रेविस्टा डेगली स्टुडी ओरिएंटाली, 95-108।

4. सेन, ए. के. (2018). इंडिजेनिटी, लैंडस्केप और इतिहास भारत में आदिवासी आत्म-निर्माण। लंदन और न्यूयॉर्क: रूटलेज टायलर एंड फ्रांसिस ग्रुप।

5. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स, झारखंड चैप्टर (2021). "बियॉन्ड द फॉरेस्ट्स" चच.65-85 फरवरी 2022 को प्राप्त किया गया।

6. बर्ट ब्रैडली और फ्रांसिस ब्रैडली (1910)। ष्छोटा नागपुर-साम्राज्य का एक अल्पज्ञात प्रांत।ष् दूसरा संस्करण, पृ.9-12